ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-4* May- 2021
Innovation The Research Concept

विज्ञान, चिकित्सा व तकनीकी व्यावसायिक क्षेत्रों में मूक–बधिर विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों की रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन

Comparative Study of Interests of Deaf and Dumb Students and Normal Students in Scientific, Medical and Technical Vocational Fields

Paper Submission: 05/5/2021, Date of Acceptance: 15/5/2021, Date of Publication: 25/5/2021

मोनिका सरोज
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
बी0एड्0 विभाग,
काशी नरेश राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
ज्ञानपुर, भदोही,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य मूक–बधिर विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों की विज्ञान, चिकित्सा व तकनीकी व्यावसायिक क्षेत्रों में रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश राज्य के कानपुर, आगरा, वाराणसी, इलाहाबाद और लखनऊ शहर से स्तरीकृत न्यादर्श विधि (समान आवंटन) का अनुपालन करते हुए 304 मूक–बधिर विद्यार्थियों व 304 सामान्य विद्यार्थियों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य में विज्ञान, चिकित्सा व तकनीकी क्षेत्रों में व्यावसायिक रुचियों के मापन हेतु चटर्जी द्वारा निर्मित 'चटर्जी नॉन लैंग्वेज प्रीफरेंस रिकार्ड–962' का प्रयोग किया गया है। एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक–विचलन एवं टी–अनुपात विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम इस प्रकार हैं– 1. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की विज्ञान व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। 2. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की चिकित्सा व्यावसायिक रुचियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। 3. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों, तथा मूक–बधिर छात्राओं और सामान्य छात्राओं की तकनीकी व्यावसायिक रुचियों में सार्थक अन्तर पाया गया है जबकि मूक–बधिर छात्रों और सामान्य छात्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

The main objective of the present research study is to make a comparative study of the interests of deaf and dumb students and normal students in Scientific, Medical and technical professional fields. For this study, 304 deaf and dumb students and 304 normal students have been selected from Kanpur, Agra, Varanasi, Allahabad and Lucknow cities of Uttar Pradesh state following the stratified sampling method (equal allocation). In the present research work, 'Chatterjee Non-Language Preference Record-962' created by Chatterjee has been used to measure professional interests in Scientific, Medical and technology. The mean, standard deviation and t-ratio method were used to analyze the collected data. The results obtained from the study are as follows-

1. No significant difference was found in the science vocational interests of deaf students and normal students. 2. Significant difference has been found in the medical vocational interests of deaf and dumb students and normal students. 3. Significant difference has been found in the technical vocational interests of deaf and dumb students and normal students, and deaf and dumb girls and normal girls, while no significant difference is found between deaf and dumb boys and normal boys.

मुख्य शब्द : विज्ञान, चिकित्सा,तकनीकी।
Scientific, Medical, Technical .

प्रस्तावना

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एन.एस. एस.ओ.) व राष्ट्रीय शिक्षा नीति की रिपोर्ट (1986) के अनुसार भारत में 3.02 मिलियन बधिर जनसंख्या है। वहीं राष्ट्रीय शिक्षा नीति की रिपोर्ट (1991) के अनुसार 3.24 मिलियन बधिर जनसंख्या 5 से 14 आयुवर्ग के मध्य है। मानव विकास रिपोर्ट (1999) के अनुसार 0.3 मिलियन श्रवण विकलांग जनसंख्या 0 से 4 आयुवर्ग की है तथा 1. 5 मिलियन 5 से 12 आयुवर्ग के मध्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट (1998) के अनुसार विश्व में 123 मिलियन व्यक्ति स्वस्थ कानों में 41 डिसिबल या अधिक श्रवण हानि से ग्रस्त हैं और इनकी ज्यादातर जनसंख्या एशिया के देशों में रह रही है। भारत सरकार की जनगणना, 2001 के अनुसार देश की जनसंख्या 102.9 करोड़ है जिसमें से 2.19 करोड़ व्यक्ति दिव्यांगजन हैं जो कुल आबादी का 2.13 प्रतिशत है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में 2.68 करोड़ दिव्यांगजन है जो कि कुल जनसंख्या का 2.21 प्रतिशत है। कुल दिव्यांगजनों में से 1.50 करोड़ पुरुष है और 1.18 करोड़ स्त्रियां है। भारत में करीब 51 लाख लोगों को श्रवण सम्बन्धी अक्षमता है जिनमें से 27 लाख पुरुष है और 24 लाख स्त्रियां है।

किसी भी वयस्क व्यक्ति की मुख्य पहचान उसके कार्य या व्यवसाय से होती है। व्यावसायिक कार्य व्यक्ति की अपनी एक अलग पहचान बनाता है जिसके द्वारा व्यक्ति स्वयं अपना व अपने परिवार का भरण–पोषण करने में सक्षम तो होता ही है साथ ही वह स्वयं में एक सन्तुष्टि एवं आत्मसम्मान का भी अनुभव करता है। दिव्यांगजन भी देश के नागरिक हैं। वे खुद को समाज पर बोझ न समझें इसीलिए उन्हें भी समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने व अपने जीवन को स्वावलम्बी बनाने का अधिकार है। किसी भी कार्य या व्यवसाय में संलग्न रहते हुए दिव्यांगजन अपनी योग्यता का उपयोग कर सकते है जिससे उनका शरीर एवं दिमाग संचालित होगा तथा वह लगातार विकास की ओर अग्रसरित होगें। दिव्यांगजन बिना दूसरों की मदद के जब कार्य करते हैं तो वे अपने आप को परिवार और समुदाय के लिए उपयोगी समझते हैं। व्यवसाय के दौरान उन्हें समाज के अन्य सदस्यों से मिलने का अवसर मिलता है जिसके फलस्वरूप वे जीवन के लिए बहुत कुछ सीखते हैं।

मूक–बधिर दिव्यांगजन के लिए उचित व्यवसाय के चयन का अत्यधिक महत्व है क्योंकि इन बालकों द्वारा बाह्य अभिव्यक्ति न कर पाने और संचार माध्यम बाधित हो जाने के कारण सामान्य दुनिया से संबंध–विच्छेद हो जाता है और इनके अन्दर हीन भावना, एकाकीपन, शंका, परावलम्बी, उदासीनता, घोर आक्रोश की भावना घर कर सकती है। जिससे इनका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है तथा ये वैयक्तिक, शैक्षिक व व्यावसायिक समस्याओं से घिर जाते हैं। इन समस्याओं के निदान व समुचित मार्गदर्शन के लिए इनकी व्यावसायिक रुचियों को जानना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है।

सामान्य छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों से सम्बन्धित अध्ययन अनेक शोध–कर्ताओं ने किया है (जयापुरानी, 1982; पतेन्सर, 1989; सक्सेना, 1991; गुप्ता, 1993; सुन्दराजन, 1993; सक्सेना, 1995; राजिक और जकरिया, 1995; मखीजा, 1998; सेतिया, 2003) वहीं विकलांग बच्चों की विज्ञान, चिकित्सा व तकनीकी व्यावसायिक रुचियों से सम्बन्धित शोध कार्य अत्यन्त सीमित संख्या में हुए हैं। चौबे (1999) ने मूक–बधिर विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिरुचियों का अध्ययन किया व निष्कर्ष स्वरूप जिन तीन व्यावसायिक क्षेत्रों को मूक–बधिर विद्यार्थियों ने अधिक पसन्द किया वे इस प्रकार हैं– कलात्मक, गणनात्मक, यांत्रिक तथा जिन तीन व्यावसायिक क्षेत्रों को मूक–बधिर विद्यार्थियों ने कम पसन्द किया वे इस प्रकार हैं– संगीत, समाजसेवा तथा प्रत्यात्मक क्षेत्र। मिश्रा (2000) के अध्ययन में निम्न–आयु स्तर के श्रवण विकलांग विद्यार्थियों ने कृषि, गृह–प्रबन्धन व कलात्मक क्षेत्रों में जबकि उच्च–आयु स्तर के विद्यार्थियों ने वाणिज्य व सामाजिक क्षेत्रों में अपनी रुचियों को प्रदर्शित किया वहीं सरोज (2009) ने श्रवण विकलांग और सामान्य विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन किया। कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित व्यावसायिक रुचि प्रपत्र का प्रयोग करते हुए निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये हैं– 1. श्रवण विकलांग बच्चों ने वैज्ञानिक, गृह प्रबन्धन, सामाजिक और हृदयग्राही व्यावसायिक क्षेत्रों में अधिक रुचि प्रदर्शित की जबकि रचनात्मक, कृषि और वाणिज्यिक क्षेत्रों में निम्न रुचि प्रदर्शित की। 2. श्रवण विकलांग और सामान्य बच्चों में वैज्ञानिक, वाणिज्यिक, हृदयग्राही और गृह–प्रबन्धन व्यावसायिक रुचि क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि साहित्यिक, प्रशासनिक, कलात्मक, कृषि और सामाजिक क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। ठाकुर (2009) ने मूक–बधिर विद्यार्थियों की व्यावसायिक प्राथमिकता के अध्ययन स्वरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त किया– 1. मूक–बधिर विद्यार्थियों द्वारा व्यवसायों को निम्न क्रमों में प्राथमिकता दी गई– प्रशासनिक, निर्माणक, व्यावसायिक, साहित्य, कृषि, कारीगर, वैज्ञानिक, सामाजिक, हृदयग्राहिता और उद्योग क्षेत्र। 2. साहित्य, वैज्ञानिक, निर्माणक व कृषि क्षेत्र में मूक–बधिर विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की विज्ञान व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की चिकित्सा व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की तकनीकी व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

उपर्युक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण एवं परीक्षण किया गया है –

1. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की विज्ञान व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की चिकित्सा व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की तकनीकी व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

(उपर्युक्त परिकल्पनाओं का परीक्षण लिंग विभिन्नता के आधार पर भी किया जायेगा।)

तकनीकी शब्दों की परिभाषा

प्रस्तुत समस्या के शीर्षक में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण निम्नांकित है–

मूक–बधिर बालक

श्रवण, मौखिक संदेशवाहकता व भाषा विकास का मुख्य ज्ञानेन्द्रिय मार्ग हैं। श्रवण दोष युक्त होने पर बालक की शाब्दिक अभिव्यक्ति का विकास भी ठीक ढंग से नहीं हो पाता है। ऐसे बच्चे जो आंशिक या पूर्णरूप से अपनी श्रवण शक्ति एवं वाणी क्षमता खो चुके हैं मूक–बधिर बालक कहलाते हैं।

सामान्य बालक

सामान्य बालक से आशय ऐसे बच्चों से हैं जो देखने, सुनने, समझने, बोलने आदि में सामान्य कोटि का है।

व्यावसायिक अभिरुचि

अभिरुचि एक मानसिक संरचना है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना लगाव या संबंध प्रकट करता है। जो अभिरुचि किसी व्यवसाय, उत्पादक कार्य अथवा धनार्जन के स्रोत से सम्बन्धित होती हैं, उन्हें व्यावसायिक अभिरुचि कहते हैं।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत अध्ययन में समस्या की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक अनुसंधान की सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में उत्तर प्रदेश के कक्षा–9 और कक्षा–10 के समस्त मूक–बधिर व सामान्य विद्यार्थियों को शोध की जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किया गया है।

उत्तर प्रदेश के कानपुर, आगरा, वाराणसी, इलाहाबाद और लखनऊ से 12 मूक–बधिर विद्यालयों व 12 सामान्य विद्यालयों का चयन न्यादर्श हेतु किया गया। स्तरीकृत न्यादर्श विधि (समान आवंटन) का अनुपालन करते हुए माध्यमिक स्तर के 304 मूक–बधिर विद्यार्थियों (177 छात्र एवं 127 छात्रा) व 304 सामान्य (177 छात्र एवं 127 छात्रा) विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विज्ञान, चिकित्सा व तकनीकी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों के मापन हेतु चटर्जी द्वारा निर्मित 'चटर्जी नॉन लैंग्वेज प्रीफरेंस रिकार्ड–962' का प्रयोग किया गया है।

1. विज्ञान– इसके अर्न्तगत भौतिकी, रसायन विज्ञान, प्रयोगशाला कार्य, खगोल विज्ञान के क्षेत्रों में अध्ययन और अध्यापन की रुचि आती है।
2. चिकित्सा– इस रुचि क्षेत्र के अन्तर्गत डाक्टर या नर्स बनने अथवा अस्पताल से सन्बन्धित किसी भी प्रकार के कार्य को करने की रुचि आती है।
3. तकनीकी– तकनीकी क्षेत्र के अर्न्तगत अभियांत्रिक और विद्युत उपकरणों (जैसे, मोटरकार, रेडियो) के उपयोग और मरम्मत, कारखानों के साथ–साथ वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में काम करने को भी शमिल किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्राविधि

अध्ययन की प्रकृति एवं उद्देश्यों के आधार पर आये हुए आँकडो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक–विचलन एवं टी–अनुपात विधि का प्रयोग किया गया है। परिकल्पित 'टी' अनुपातों की सार्थकता का निर्धारण .05 स्तर पर किया गया है।

परिणाम तथा विवेचन

समस्या से सम्बधित आँकडों के विश्लेषण के आधार पर परिणामों को प्राप्त किया किया गया। प्रस्तुत शोध समस्या के उद्देश्यों पर आधारित परिकल्पनाओं के सम्बन्ध में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए हैं–

1. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की विज्ञान व्यावसायिक रुचियों की तुलना

यह परिकल्पित किया गया है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की विज्ञान व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका–1

मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की 'विज्ञान' व्यावसायिक रुचियों में तुलना को दर्शाते हुए मध्यमान, मानक–विचलन और 'टी' अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान		मानक–विचलन		'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
		मूक–बधिर	सामान्य	मूक–बधिर	सामान्य		
कुल विद्यार्थी	304	32.26	33.21	10.35	9.47	1.19	असार्थक
छात्र	177	34.69	34.90	8.95	9.82	0.28	असार्थक
छात्रा	127	31.98	33.17	11.77	9.95	0.91	असार्थक

तालिका–1 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों, मूक–बधिर छात्र और सामान्य छात्र तथा मूक–बधिर छात्राओं और सामान्य छात्राओं के लिए परिगणित टी का मान 1.19, 0. 28 तथा 0.91 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित सारणीमान (=1.96) से कम है अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक नहीं है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है। अतः यह कहा जा सकता है कि विज्ञान व्यावसायिक रुचि क्षेत्र के सन्दर्भ में मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों, मूक–बधिर छात्र और सामान्य छात्र तथा मूक–बधिर छात्राओं और सामान्य छात्राओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की चिकित्सा व्यावसायिक रुचियों की तुलना

यह परिकल्पित किया गया है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की चिकित्सा व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका–2

मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की 'चिकित्सा' व्यावसायिक रुचियों में तुलना को दर्शाते हुए मध्यमान, मानक–विचलन और 'टी' अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान		मानक–विचलन		'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
		मूक–बधिर	सामान्य	मूक–बधिर	सामान्य		
कुल विद्यार्थी	304	33.53	36.44	9.90	9.37	3.73	.05
छात्र	177	34.54	36.76	9.41	9.69	2.88	.05
छात्रा	127	32.12	35.99	10.44	8.92	3.17	.05

तालिका–2 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों, मूक–बधिर छात्र और सामान्य छात्र तथा मूक–बधिर छात्राओं और सामान्य छात्राओं के लिए परिगणित टी का मान 3.73, 2. 88 तथा 3.17 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित सारणीमान (=1.96) से अधिक है अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जा सकती है। सामान्य विद्यार्थियों, सामान्य छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान (=36.44, 36.76 तथा 35.99) मूक–बधिर विद्यार्थियों, मूक–बधिर छात्र तथा छात्राओं के मध्यमान (=33.53, 34.54 तथा 32.12) से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थियों, सामान्य छात्र तथा छात्राओं की तुलना में मूक–बधिर विद्यार्थियों, मूक–बधिर छात्र तथा छात्राएं चिकित्सा व्यावसायिक क्षेत्र को कम पसन्द करती हैं।

3. मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की तकनीकी व्यावसायिक रुचियों की तुलना

यह परिकल्पित किया गया है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की तकनीकी व्यावसायिक रुचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका–3

मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों की 'तकनीकी' व्यावसायिक रुचियों में तुलना को दर्शाते हुए मध्यमान, मानक–विचलन और 'टी' अनुपात

समूह	संख्या	मध्यमान		मानक–विचलन		'टी' अनुपात	सार्थकता स्तर
		मूक–बधिर	सामान्य	मूक–बधिर	सामान्य		
कुल विद्यार्थी	304	28.37	26.27	7.68	7.81	3.39	.05
छात्र	177	28.17	27.11	7.58	7.06	1.80	असार्थक
छात्रा	127	28.64	25.10	7.84	864	3.44	.05

तालिका–3 में दिये गये परिणाम से स्पष्ट है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों, तथा मूक–बधिर छात्राओं और सामान्य छात्राओं के लिए परिगणित टी का मान 3..39 तथा 3.44 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित सारणीमान (=1.96) से अधिक है अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जा सकती है। मूक–बधिर विद्यार्थियों और मूक–बधिर छात्राओं का मध्यमान (=28.37 तथा 28.64) सामान्य विद्यार्थियों और सामान्य छात्राओं के मध्यमान (=26.27 तथा 25.10) से अधिक है अतः यह कहा जा सकता है कि सामान्य विद्यार्थियों और सामान्य छात्राओं की तुलना में मूक–बधिर विद्यार्थी और मूक–बधिर छात्राएं तकनीकी व्यावसायिक क्षेत्र को अधिक पसन्द करती हैं।

वहीं मूक–बधिर छात्र और सामान्य छात्रों के लिए परिगणित टी का मान 1.80 है जो 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु अपेक्षित सारणीमान (=1.96) से कम है अतः 0.05 स्तर पर यह सार्थक नहीं है। इस प्रकार शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जा सकती है। अतः यह कहा जा सकता है कि तकनीकी व्यावसायिक रुचि क्षेत्र के सन्दर्भ में मूक–बधिर छात्र और सामान्य छात्रों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

मूक–बधिर विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों में विज्ञान व्यावसायिक रुचि क्षेत्र में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया, साथ ही साथ इनमें लिंग विभिन्नता (छात्र–छात्रा) के आधार पर भी कोई अन्तर नहीं पाया गया अतः यह कहा जा सकता है कि दोनों ही समूह के

विद्यार्थियों द्वारा विज्ञान व्यावसायिक रुचि क्षेत्र को समान रुप से पसन्द किया जाता है। दोनों ही वर्ग के विद्यार्थी भौतिकी, रसायन, प्रयोगशाला, खगोलविज्ञान के क्षेत्रों व बाह्य जीवन में सक्रिय होकर काम करने की इच्छा रखते हैं। इस अध्ययन के निष्कर्ष के विपरीत ठाकुर (2009) ने अपने अध्ययन में मूक–बधिर और सामान्य बच्चों में विज्ञान सम्बन्धित व्यावसायिक क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया।

मूक–बधिर विद्यार्थियों व सामान्य विद्यार्थियों में चिकित्सा व्यावसायिक रुचि क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया गया। यह अन्तर लिंग विभिन्नता (छात्र–छात्रा) के आधार पर भी पाया गया है। सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में मूक–बधिर विद्यार्थियों द्वारा चिकित्सा व्यावसायिक रुचि क्षेत्र को कम पसन्द किया गया है। इस प्रकार हम कह सकते है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों द्वारा डॉक्टर या नर्स बनने अथवा अस्पताल से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के कार्य को करने की रुचि सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में कम है। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि सामान्य वर्ग के विद्यार्थी मूक–बधिर विद्यार्थी की तुलना में लोगों के प्रति सेवा भाव अधिक रखते हों। डाक्टर, नर्स अथवा अस्पताल से सम्बन्धित कार्यो को करने में गौरव महसूस करते हों या इस व्यवसाय से जुड़कर वे अधिक नाम व धन कमाना चाहते हों। जबकि मूक–बधिर बच्चे समाज द्वारा उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारण अलग–थलग पड़ जाते हैं और उन्हें सामाजिक कार्यों में अरुचि हो जाती है। ये भी हो सकता है कि उन्हें ये क्षेत्र बोझिल और कठिन लगता हो और विकलांगता के कारण वे इस क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन सर्वोत्तम न कर पायें। इस व्यवसाय के प्रति इन्हें अभिभावकों तथा अध्यापकों द्वारा अभिप्रेरित ना किया जाता हो। सुन्दराजन (1993) ने अपने अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप छात्र और छात्राओं द्वारा चिकित्सा सम्बन्धित व्यावसायिक क्षेत्र को समान रूप से पसन्द किया गया। जयापुरानी (1982) के अध्ययन में भी सामान्य छात्रों द्वारा चिकित्सा व्यावसाय को पसन्द किया गया।

मूक–बधिर विद्यार्थियों और सामान्य विद्यार्थियों तथा मूक–बधिर छात्राओं और सामान्य छात्राओं में तकनीकी व्यावसायिक रुचि क्षेत्र में सार्थक अन्तर पाया गया है। मूक–बधिर विद्यार्थियों और मूक–बधिर छात्राओं द्वारा सामान्य की तुलना में तकनीकी व्यावसायिक रुचि क्षेत्र को अधिक पसन्द किया गया। इस प्रकार हम कह सकते है कि मूक–बधिर विद्यार्थियों द्वारा अभियांत्रिक और विद्युत उपकरण जैसे मोटरकार, रेडियों आदि के उपयोग और मरम्मत, कारखानों के साथ–साथ वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में काम करने आदि को सामान्य विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पसन्द किया जाता है। मूक–बधिर विद्यार्थियों द्वारा तकनीकी क्षेत्र को पसन्द करने का मुख्य कारण इसमें सम्प्रेषण का कम प्रयोग तथा हस्थ कौशल का अधिक प्रयोग हो सकता है। इनके द्वारा अभियांत्रिक और विद्युत उपकरणों के उपयोग और मरम्मत आदि को करने में सहजता महसूस होती होगी तथा ये अपने आपको इस व्यवसाय में निपुण पाते होगे। अभिभावकों तथा शिक्षकों द्वारा भी इन्हें तकनीकी ज्ञान अधिक दिया जाता होगा जिससे ये व्यावसायिक रूप से निपुण हो सकें। स्कॉल्ट (1985) के अध्ययन में निष्कर्ष स्वरूप श्रवण विकलांग छात्राओं द्वारा तकनीकी व्यवसाय को अधिक पसन्द किया गया।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन हेतु निहितार्थ

प्रत्येक व्यक्ति के लिए निर्देशन का किसी न किसी क्षेत्र में, किसी न किसी दृष्टि से महत्व होता है। सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा कुछ विशिष्ट समूहों से सम्बन्धित व्यक्तियों के लिए निर्देशन की अनिवार्य रूप से आवश्यकता होती है। सामान्यतः निर्देशन की दृष्टि से माध्यमिक स्तर को महत्वपूर्ण माना जाता है। इस स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी, किशोरावस्था में प्रविष्ट हो चुके होते हैं। यही समय होता है जब बालक के भावी जीवन की नींव रखी जाती है। इस स्तर पर बालकों के विचारों में परिवर्तन होने लगता है। अतः माध्यमिक स्तर पर निर्देशन का स्वरूप किशोर एवं किशोरियों की रुचियों, आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर निर्धारित करना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के जीवन की सफलता, संतोष तथा समाज की दृष्टि से भी व्यावसायिक निर्देशन एक महत्वपूर्ण प्रक्रम है। व्यक्तियों के गुणों एवं व्यवसाय के अवसरों के साथ उनके सम्बन्ध को ध्यान में रखते हुए व्यक्ति के व्यवसाय के चयन एवं उसकी प्रगति में आने वाली समस्याओं को सुलझाने में प्रदान की जाने वाली सहायता को व्यावसायिक निर्देशन कहते हैं। मूक–बधिर बालकों के लिए निर्देशन कार्यक्रम की रूपरेखा बनाते समय इनको वर्गीकृत किया जाना भी आवश्यक है। यह वर्गीकरण उनकी व्यक्तित्व विशेषताओं, रुचियों, आकांक्षाओं, क्षमता, योग्यता, क्रियाशीलता, त्रुटिदोष का निदानात्मक वैयक्तिक मिश्रित विधि से मूल्यांकन, इन्द्रिय क्षमताओं, मानसिक योग्यता, मौखिक योग्यता, सामाजिक गुण, विकलांगता के स्तर, आयु–भेद, कक्षा–भेद आदि के आधार पर हो सकता है। ऐसे बालकों के व्यवसाय की योजना पूर्व में बनाना अनिवार्य है। इन्हें ऐसे व्यवसायों की आवश्यकता होती है जिनमें कम से कम शाब्दिक सम्प्रेषण होता हो। प्रिंटिंग, बिजली सम्बन्धी कार्य, कौशलयुक्त लकड़ी का कार्य, खाना पकाने का कार्य, कलात्मक कार्य, बढ़ईगिरी आदि कार्य इनके लिए उपयुक्त होते हैं। हिसाब–किताब का कार्य भी मूक–बधिर बालक भली प्रकार कर सकते हैं। आजकल व्यवसायों में वृद्धि के साथ मूक–बधिर बालकों के लिए अपने अनुरूप व्यवसाय पाना उतना जटिल नहीं रह गया है जितना पहले था जब ऐसे बालकों को समाज में एक भार माना जाता था।

इस प्रकार की कुशलतापूर्वक आयोजित व्यवस्था मूक–बधिर बालकों को न केवल शिक्षित करने में सहायक होगी बल्कि उनके भविष्य को भी सुरक्षित रखने में सहायक होगी। इस बात का स्पष्ट प्रभाव ऐसे बालकों के सन्तुलित व्यक्तित्व विकास पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। उचित निर्देशन द्वारा उनमें स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास होगा और वे लोगों के बीच अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल होंगे। उनमें सुरक्षा की भावना व आत्म–प्रदर्शन की भावना विकसित होगी तथा वे

आत्मविश्वास से परिपूर्ण होंगे। वे स्वकार्य में दक्षता प्राप्त कर सकेंगे साथ ही वे अपनी पसन्द का कोई भी व्यवसाय कर सकने में सक्षम हो सकेंगे। उपयुक्त निर्देशन द्वारा उनमें ऐसे सामाजिक और चारित्रिक दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए जिससे वे निर्भरता एवं स्वतन्त्रता के बीच एक सन्तुलन स्थापित कर सकें।

इन तकनीकों के अतिरिक्त एक सफल निर्देशन के लिए माता–पिता, शिक्षक, डॉक्टर, मनोवैज्ञानिक तथा निर्देशक सभी में सहयोग की भावना होना आवश्यक है। उनकी यह जिम्मेदारी बनती है कि वे ऐसे छात्रों को समायोजित करें व उनकी इस कमी को दूर कर उन्हें किसी कलात्मक व रचनात्मक कार्य की ओर प्रेरित करें जिससे वे भविष्य में सफल व्यक्ति बन सकें। इस तरह ये सही निर्देशन प्राप्त कर अपनी वैयक्तिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक समस्याओं को सुलझाकर सही दिशा प्राप्त कर उचित रोजगार पाकर स्वावलम्बी बन सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. *गुप्ता, आर. आर. (1993). ए स्टडी ऑफ डिटरमिनेन्ट्स ऑफ द वोकेशनल इन्ट्रेस्ट इन अंडर ग्रेजुएट स्टूडेन्ट्स (विथ स्पेशल रिफरेन्सेंस टू डिस्ट्रिक्ट कानपुर सिटी, यू.पी.) पीएच.डी. थीसिस, एजुकेशन, सी.एस.जे.एम. यूनिवर्सिटी, कानपुर.*
2. *चौबे, आर. (1999). मूक–बधिर विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचियों का अध्ययन. लघु शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद.*
3. *जयापुरानी, एन. (1982). वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ हायर सेकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स. एम.फिल. होम साइन्स, अविनाशलिंगम इन्स्टीट्यूट फॉर होमसाइन्स एण्ड हायर एजुकेशन फॉर वुमेन, कोयम्बटूर.*
4. *ठाकुर, पी. (2009). टू स्टडी दी वोकेशनल प्रीफरेन्स ऑफ डेफ एण्ड डम्ब स्टूडेन्ट्स. रिसर्च एण्ड स्टडीज, 59–60, 35–36.*
5. *पतेन्सर, पी. (1989). इकोनॉमिक पैरामीटर एण्ड इन्ट्रेस्ट ऑफ वोकेशनल स्ट्रीम स्टूडेन्ट्स. एम.फिल. एजुकेशन, मदुरई कामराज यूनिवर्सिटी.*
6. *मखीजा, एल. (1998). ए स्टडी ऑफ रिस्क–टेकिंग, सेल्फ–स्ट्रीम एण्ड फैमिली प्लानिंग इन रिलेशन टू वोकेशनल इन्ट्रेस्ट. पीएच.डी. थीसिस, एजुकेशन, आगरा यूनिवर्सिटी.*
7. *मिश्रा, ए. (2000). श्रवण विकलांग विद्यार्थियों की व्यावसायिक रुचि का उनके आयु के सन्दर्भ में अध्ययन. अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षासंकाय, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली.*
8. *रज़िक, जे.; ज़कारिया, जे (1995). इन्ट्रेस्ट ऑफ एडोल्सन्स विद रिफरेंस टू एज, जेंडर एण्ड सोशियो–इकोनॉमिक स्टेटस. इण्डियन जर्नल ऑफ अप्लाइड साइकोलॉजी, 32(1–2), 45–51.*
9. *वेहमन, पी. (2001). लाइफ बियॉन्ड द क्लासरूम. पॉल. एच. बुक्स पब्लिशिंग कं., बाल्टीमोर मैरीलैण्ड, पृ. 543.*
10. *स्कॉल्ट, के. (1985). म्युचुअल डिट्रमिनेशन बाय मीन्स ऑफ पर्सनल, सोशल एण्ड वोकेशनल फैक्ट्र्स इन द रिहैबिटेशन ऑफ द डेफ. इन आई. जी. टेलर (एडी.). द एजुकेशन ऑफ द डेफ (2 एडी.), 1098–1125, न्यूयार्कः क्रोम हेल्म.*
11. *सक्सेना, एम. (1991). ए स्टडी ऑफ वोकशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ एडोल्सन्स ऑफ +2 लेवल. अनपब्लिश्ड डिजर्टेशन, रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी, बरेली.*
12. *सक्सेना, आर. (1995). पैटर्न्स ऑफ वोकेशनल इन्ट्रेस्ट इन रिलेशन विद क्रिएटिविटी काम्पोनेन्ट, इन्टिलिजेंस एण्ड सेक्स. पीएच.डी. थीसिस, साइकोलॉजी, आगरा यूनिवर्सिटी, आगरा.*
13. *सरोज, एम. (2009). वोकशनल इन्ट्रेस्ट ऑफ हियरिंग–इम्पेयर्ड एण्ड नॉर्मल चिल्ड्रेन. एजुकेशनल हेराल्ड, 38(2), 59–68.*
14. *सारस्वत, एस. (2007). विकलांगो का सहारा : रेशम उद्योग. कुरूक्षेत्र, मई–2007, 38–40.*
15. *सुन्दरारजन, एस. (1993). वोकेशनल प्रीफरेन्स ऑफ द हायर सेकेन्ड्री स्टूडेन्ट्स. एक्सपेरिमेन्ट इन एजुकेशन, 21(10), 241–249.*
16. *सेतिया, एस. (2003). माता की शिक्षा का बालकों की व्यावसायिक अभिरुचियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन. लघु शोध प्रबन्ध, शिक्षासंकाय, रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली.*